ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सर्दियों के मौसम में बकरियों मे होनवाले रोग तथा उनसे बचाव कैसे करें?

आनंद मोहन1 और नीलम कुशवाहा2

[1]पशुचिकित्सा नैदानिक परिसर, [2]पशुऔषधि विज्ञान विभाग

पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय (बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना)

किशनगंज, बिहार -८५५१०७

सर्दियों का मौसम बकरियों के स्वास्थ्य की दृष्टि से चुनौतीपुर्ण है। ठंड में जीवाणु, विषाणु और परजीवी रोगों के प्रति बकरियों की संवेदनशीलता बढ़ जाती है। बकरियों में, सर्दियों में होने वाली आम बीमारियों में बकरी प्लेग, चेचक, निमोनिया, एंटरोटॉक्सिमिया, साल्मोनेलोसिस और खुर-गलन रोग शामिल हैं। ये बीमारियाँ अक्सर अत्यधिक ठंड, गीला फर्श, बाडें में खराब वायु-संचार, तनाव और अपर्याप्त पोषण जैसे कारकों के कारण होती हैं।ये कारक बकरियों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर करते हैं। बकरी प्लेग और चेचक, दो प्रमुख बीमारियां हैं, जो ठंड के मौसम में अक्सर बकरियों को प्रभावित करती है। पशुधन स्वास्थ्य की सुरक्षा और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए, रोग निवारक उपाय तथा प्रभावी प्रबंधन महत्वपूर्ण हैं। मुख्य रोकथाम के तरीकों में उचित आवास, अच्छा वायु-संचार, स्वच्छ वातावरण, टीकाकरण, नियमित कृमिनाशक और उच्च गुणवत्ता वाले चारा के माध्यम से पर्याप्त ऊर्जा प्रदान करना शामिल है। इसके अलावा, सर्दी शुरू होते ही सबसे पहले, बकरियों के आवास में बदलाव करें। बकरियों के बाडें को इस तरह से ढक दें कि उसमे ठंडी हवा के कारण तापमान कम न हो। यह भी सुनिश्चित करे कि सुबह 10 बजे के बाद और शाम को चार-पांच बजे तक ही बकरियों और उनके बच्चों को खुले चारागाह में चराएं।

क. सर्दी में होनेवाले बकरियों के रोग

बकरी प्लेग

बकरी प्लेग को पी.पी.आर. के नाम से भी जाना जाता है। यह बकरियों की बहुत ही घातक बीमारी है। यह एक विषाणु जनित बीमारी है। ये संक्रमित बकरियों से स्वस्थ बकरियों में तेजी से फैलती है। ठंड के मौसम में इसकी संक्रामकता बढ़ जाती है। उपचार व बचाव अगर नहीं किया गया तो बीमार बकरी की मृत्यु हो जाती है।

लक्षणः बकरी प्लेग में बकरी को दस्त होने लगते हैं। निमोनिया होने से नाक और आंख से स्राव, तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ, मुंह में घाव, भूख न लगना, दस्त, आदि मुख्य लक्षण है।

उपचार व रोकथामः संक्रमित जानवरों को स्वस्थ जानवरों से अलग रखें। उचित इलाज से बकरियों में मृत्यु दर कम किया जा सकता है। बकरी प्लेग का निश्चित उपचार नही है, इसलिए लक्षण के अनुरूप इलाज से संक्रमित बकरी को बचाया जा सकता है। बकरी प्लेग से बचाव के लिए बकरियों का टीकाकरण आवश्यक है। 3 महीने की उम्र में पहला टीका लगवाएँ। उसके बाद वार्षिक बूस्टर टीका प्रत्येक वर्ष लगाना आवश्यक हैं।

बकरी-चेचक

बकरी-चेचक एक विषाणु जनित रोग है। अन्य पशुओं की अपेक्षा, बकरी में इसकी संक्रामकता एवं गंभीरता अत्यधिक होती है। इस रोग में मेमना एवं युवा बकरी में मृत्यु दर अधिक होती है। सर्दियों में बकरी-चेचक के विषाणु, कम तापमान के कारण वातावरण में ज्यादा दिन तक संक्रामक रहते हैं।

लक्षणः शुरुआती लक्षणों में तेज बुखार आना, नाक से स्राव, सांस लेने में कठिनाई, चारा न खाना, और बच्चों में दूध पीने की कमी देखी जाती है। कुछ दिन बाद बकरियों के शरीर पर दाने या चकत्ते बन जाते हैं। बकरी को चेचक होने पर निमोनिया भी हो जाता है। अगर शुरुआत में उपचार व रोकथाम नहीं की गई, तो झुंड की कई अन्य बकरियों भी प्रभावित हो जाती हैं।

उपचार व रोकथामः संक्रमित जानवरों को स्वस्थ जानवरों से अलग रखें। बकरी-चेचक का निश्चित उपचार नहीं है। इसमें लक्षण के अनुरूप इलाज किया जाता है। जैसे कि बुखार, एलर्जी, निमोनिया, इत्यादि के लिए औषधि देना चाहिए। बकरी-चेचक से बचाव के लिए बकरियों का टीकाकरण आवश्यक है। 3 महीने की उम्र में पहला टीका लगायें। उसके बाद वार्षिक बूस्टर टीका प्रत्येक वर्ष लगाना आवश्यक है।

निमोनिया

बकरियों मे निमोनिया सर्दियों में प्रायः होनेवाले रोग है। आमतौर पर निमोनिया, श्वसन तंत्र में जीवाणु व विषाणु के पनपने से होता है। जीवाणु व विषाणु बकरी के श्वसन तंत्र में सहभोजी के रूप में पहले से ही मौजूद रहते हैं। बकरी की प्रतिरक्षा क्षमता कमजोर होने पर इनका गुणन बढ़ता है और बकरियां निमोनिया से ग्रसित हो जाती हैं।

लक्षणः निमोनिया एक श्वसन संबंधी बीमारी है जो ठंड, गीले और खराब वायु-संचार वाले आवास में होता है। बुखार, सांस लेने में कठिनाई, खांसी, नाक से स्राव, चारा कम खाना, वजन कम होना, इत्यादि इस रोग के लक्षण हैं।

उपचार व रोकथामः सुनिश्चित करें कि जानवरों को साफ पानी मिले और बाडें़ मंे वायु-संचार पर्याप्त हो। उपचार के दौरान सुनिश्चित करें कि एंटीबायोटिक का उपयोग कम करना पड़ें। लक्षण के अनुरूप इलाज करना आवश्यक है। नाक से स्राव कम करने के लिए औषधि एवं अन्य सहयोगी उपचार करना आवश्यक है। इसके लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है। बकरियों को आवास और चारे मंे बदलाव करके निमोनिया से बचाया जा सकता हैं।

एंटरोटॉक्सिमिया

एंटरोटॉक्सिमिया एक अचानक होने वाली अक्सर अत्यंत घातक बीमारी है। विशेष रूप से यह युवा जानवरों में होती है।, यह बीमारी क्लोस्ट्रीडियम-परफिरिंगेंस जीवाणु के द्वारा उत्पन्न विष के कारण होती है। सर्दियों और वसंत ऋतु में यह रोग अधिक आम है। एंटरोटॉक्सिमिया के जीवाणु छोटी आँत में पहले से ही मौजूद रहते हैं। अक्सर सर्दियों में, खासकर सुबह के समय जब घास के ऊपर ओस की बूंदें जमी रहती है, ऐसे घास चरने से बकरी के पेट मे एंटरोटॉक्सिमिया के जीवाणु की संख्या बढ़ने लगती है और जीवाणु-विष उत्सर्जित करते है। जिसके कारण बकरी में एंटेरोटॉक्सेमिया के लक्षण

दिखने लगते हैं। जिन बकरियों को ज्यादा कार्बोहाइड्रेट अथवा अच्छा चारा दिया गया हो तथा जो बकरी स्वस्थ है, उनमें एंटरोटॉक्सिमिया की संभावना ज्यादा होती है। एंटरोटॉक्सिमिया से गर्भवती बकरियों में दस्त और गर्भपात भी हो जाता है।

लक्षणः एंटरोटॉक्सिमिया की आक्रामकता इतनी अधिक होती है कि दो से चार घंटे के अंदर ही बकरी की मृत्यु हो जाती है। शव-परीक्षण में, गुर्दा का मुलायम होना, एंटरोटॉक्सिमिया बीमारी की पुष्टि करता है। इसलिए, एंटरोटॉक्सिमिया को पल्पी-किडनी रोग भी कहते है।

उपचार व रोकथामः संक्रमित बकरी में अगर जीवाणु-विष बन गया है तो, उसका उपचार कठिन है। परंतु जीवाणु को पनपने से रोकने के लिए एंटीबायोटिक का उपयोग किया जाता है। अगर एंटरोटॉक्सिमिया की आक्रामकता कम है तो, लक्षण के अनुरूप इलाज से संक्रमित बकरी को बचाया जा सकता है। बचाव के तौर पर, ज्यादा मात्रा में कार्बोहाइड्रेट चारा मे न दे, क्योकि कार्बोहाइड्रेट किण्वन एंटरोटॉक्सिमिया-जीवाणु को पनपने में मदद करता है। दिन के कम तापमान वाले समय के दौरान बकरी को चरने के लिए ना छोड़े, खासकर सुबह में जब घास पर ओस के बूंद मौजूद हो ज्यादा चारा और खाना न दें। टीकाकरण के लिए, 3-4 महीने की उम्र में पहला टीका तथा 3-4 सप्ताह के बाद बूस्टर टीकाकरण करें। हर 6-12 महीने में टीका दोहराएँ।

कोलीबैसिलोसिस

कोलीबैसिलोसिस एक जीवाणुजनित रोग है। यह मेमनों को ज्यादा प्रभावित करता है। सर्दियों में बाडें में गीलापन ज्यादा होने के कारण, इसका संक्रमण ज्यादा होता है। मुख्यतः इसके जीवाणु बकरी के मल-मूत्र से इसके मेमनों में, मुख के माध्यम से संक्रमित करते हैं। अगर मेमनों को उसकी मादा का खीस नहीं मिला है तो इसकी संभावना और ज्यादा हो जाती है। खीस इन बीमारियों से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है।

लक्षणः दस्त, युवा जानवरों में चारे का सेवन कम होना और अचानक मृत्यु, इस रोग के लक्षण हैं। अगर लक्षण ज्यादा दिन तक दिखे तो पहले बुखार होता है, इसके बाद शरीर का तापमान कम हो जाता है। अगर इलाज नहीं किया गया तो, इलेक्ट्रोलाइट की कमी, निर्जलीकरण तथा अल्पताप के कारण मृत्यु हो जाती है।

उपचार व रोकथामः उपचार के लिए संक्रमित मेमनों को गर्म जगह पर रखें। इलेक्ट्रोलाइट की कमी व निर्जलीकरण में अंतःशिरा से आवश्यक ग्लूकोस व इलेक्ट्रोलाइट दिन में एक से दो बार देना आवश्यक है। इसके अलावा जीवाणु की गुणन रोकने के लिए उचित एंटीबायोटिक का उपयोग करें। सहयोगी उपचार के मदद से मेमनो को बचाया जा सकता है। बचाव के लिए मेमुनो के बाड़ें को गर्म रखें। बाड़ें को नियमित रूप से साफ और कीटाणुरहित करें। जानवरों को पीने के लिए साफ पानी दें। कोलीबैसिलोसिस के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है। जन्म के तुरंत बाद माता का पहला खीस मेमनों को देना आवश्यक है।

साल्मोनेलोसिस

साल्मोनेलोसिस एक जीवाणु संक्रमित रोग है, जो सर्दियों और वसंत ऋतु में आम है। यह बीमारी मेमनों और व्यस्क बकरियों में होती है। अगर बकरियों की प्रतिरक्षा क्षमता कम हो गई है तो

यह तेजी से फैलता है। साल्मोनेलोसिस जीवाणु संक्रमित जानवरों के मल-मूत्र तथा संक्रमित चारा के माध्यम से दूसरे जानवरों में फैलता है। साल्मोनेलोसिस गर्भवती बकरियों में दस्त और गर्भपात करता है।

लक्षणः साल्मोनेलोसिस के लक्षण विभिन्न बकरियों में अलग- अलग होते हैं, तथा लक्षण इस बात पर निर्भर करता है कि साल्मोनेलोसिस-जीवाणु ने शरीर के किस तंत्र को प्रभावित किया है। परंतु, साधारणतः बुखार, भूख न लगना, शिथिलता, प्रमुख लक्षण हैं। मेमनों में दस्त (रक्त के साथ) आम है।

उपचार व रोकथामः इलाज के लिए लक्षण के अनुरूप सहयोगी उपचार दिया जाता है। जैसे की उचित एंटीबायोटिक जीवाणु के गणन को रोकने के लिए, इसी तरह एंटीपायरेटिक-औषधि शरीर के तापमान को कम करने के लिए, तथा एलर्जी-रोधी औषधि प्रमुख है। बचाव के लिए बाड़ें को जीवाणुरहित करना आवश्यक है। संक्रमित बकरी को अलग रखें और उसे चारा-पानी भी अलग दें। साल्मोनेलोसिस के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है। उचित आवास एवं पोषण प्रबंधन इस बीमारी के लिए कारगर बचाव है।

खुर-गलन

खुर-गलन एक जीवाणुजनित रोग है जो गीली और कीचड़ भरी जगहों में पनपता है। आमतौर पर यह रोग भेडों में अधिक देखा गया है। परंतु आवास-प्रबंधन में त्रूटियों के कारण फर्श पर गीलापन और कीचड (बकरी के मल-मूत्र) के कारण, खुर-गलन बकरियों में भी हो जाता है। खुर-गलन कई जीवाणु के कारण होता है। इसमें विशेष कर मृदा-जीवाणु सहभोजी के तौर पर खुर में गलन करते हैं। लगभग सभी खुर-गलन में फुजाबैक्टीरियम-नैक्रोफोरम जीवाणु पाया गया है।

लक्षणः खुर-गलन से लंगड़ापन हो सकता है। शरीर का भार खुर पर ना रखना, खुर के ऊपर सूजन, खुर से दुर्गंध, कभी-कभी खुर से मवाद भी आने लगता है। कुछ मामलों में जीवाणु-विष के कारण अन्य लक्षण भी दिखाई देते हैं।

उपचार व रोकथामः उपचार के लिए खुर को पोटैशियम परमेंगनेट (0.01%) से धोकर, पोवीडान-आयोडीन (10%) से सफाई अनिवार्य है। जीवाणु-नाशक मलहम उपयोगी होता है पर, खुर का मृदा के संपर्क में रहने के कारण इसकी उपयोगिता कम है। ऐसे में खुर पर जिंक-सल्फेट, जिंक-ऑक्साइड व कॉपर-सल्फेट के पाउडर का छिड़काव अत्यंत लाभकारी होता है। खुर-गलन से बचाव के लिए फर्श को जीवाणुरहित रखें। खुर को साफ एवं स्वच्छ रखें। बाडें में धूप का आना निश्चित करें। मल-मूत्र का निष्पादन जल्द से जल्द करें। संक्रमित आवास-फर्श पर जिंक-सल्फेट, जिंक-ऑक्साइड व कॉपर-सल्फेट के पाउडर का छिड़काव भी खुर-सड़न से बचाव के लिए जरूरी है।

अन्य बीमारियाँ जो शीतकालीन मौसम में होती हैं

निमोनिक-पाश्चुरेलोसिस

निमोनिक-पाश्चुरेलोसिस एक जीवाणु जनित रोग है। यह बीमारी गो-जातीय पशुओं में आम है, जोकि मुख्यतः तनाव के कारण होता है। निमोनिक-पाश्चुरेलोसिस बकरियों में सर्दियों में ठंड के तनाव के कारण होता है। ठंड में प्रतिरक्षा क्षमता कमजोर होने से, सहभोजी जीवाणु (मैनहेमिया-हेमोलिटिका

व पाश्चरेला-मल्टोसिडा) की संख्या, ऊपरी श्वसन तंत्र में बढ़ने लगती हैं, जिसके फलस्वरुप निमोनिक-पाश्चुरेलोसिस के लक्षण दिखाई देते हैं।

लक्षणः बड़े जानवरों में नाक से स्राव, खांसी, मुंह में हल्का झाग, सांस की तकलीफ, आदि दिखाई देते हैं। बुखार और कम चारा खाना आम लक्षण हैं। सर्दी जैसी प्रतिकूल परिस्थिति में रोग अधिक होता है। समय पर इलाज न मिलने पर अन्य लक्षण भी दिखाई देते हैं, जो कि निर्भर इस बात पर करता है कि जीवाणु-विष शरीर से किस तंत्र को ज्यादा नुकसान पहुंचा है। कभी-कभी जानवरों में नैदानिक लक्षणों के बिना अचानक मृत्यु हो जाती है।

उपचार व रोकथामः उपचार में उचित एंटीबायोटिक जितना जल्दी हो सके दिया जाना चाहिए। इसके अलावा लक्षण के अनुरूप सहयोगी उपचार जरूरी है। बचाव के लिए ठंड के तनाव को कम करना आवश्यक है। निमोनिक-पाश्चुरेलोसिस के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है।

खुरपका-मुँहपका रोग

खुरपका-मुँहपका रोग एक विषाणुजनित संक्रामक रोग है। यह अक्सर गो-जातीय पशुओं में होने वाली बीमारी है। बकरियों को आमतौर पर गो-जातीय पशुओं के साथ रखा जाता है, जिसके चलते यह बीमारी बकरियों में भी हो जाती है। बकरी में खुरपका-मुँहपका रोग इतना गंभीर नहीं होता है।

लक्षणः बुखार, मुँह में छाले, जीभ पर छाले, गाल के अंदर में छाले हो जाते है। मुँह से अत्यधिक लार टपकना, मुँह को बार-बार चलाने के कारण मुँह के चारों तरफ झाग दिखाई देता है। खुर में घाव, पैरों में सूजन और चलने में कठिनाई होती है। कभी-कभी वयस्क बकरियों में केवल लंगड़ापन होता है।

उपचार व रोकथामः मुँह के छालों को पोटैशियम परमेंगनेट (0.01%) के घोल से साफ करना चाहिए। इसके उपरांत बोरिक-एसिड और ग्लिसरीन का समानुपाती लेप मुँह के छाले पर दिन में तीन से चार बार लगाना चाहिए। इसके साथ-साथ, अन्य लक्षणों के अनुरूप सहयोगी उपचार तुरंत देना चाहिए। बकरी को खाने के लिए मुलायम चारा दें। खुरपका-मुँहपका रोग का पहला टीका 3-4 महीने की उम्र में करें । इसके 3-4 सप्ताह के बाद बूस्टर टीकाकरण करें और हर 6 महीने में (अक्टूबर और अप्रैल) में टीकाकरण दोहराएं।

ओर्फ रोग

ओर्फ रोग उन बकरियों में आम है जो कि पहले से ही कुपोषित है और जिनका वृद्धि दर कम है। जिन बकरियों की प्रतिरक्षा क्षमता कमजोर होती है उनमे ओर्फ रोग होने की संभावना ज्यादा होती है। यह एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है। यह बीमारी बकरी से मनुष्यों में फैलती है।

लक्षणः मुँह के चारों ओर पपड़ी और घाव हो जाता है। होठों के कोनों में सूजन और रूखापन, उसके बाद वहां की त्वचा और श्लेष्मा-झिल्ली कठोर गांठदार हो जाती है। बकरी को मुँह खोलने में दिक्कत होने लगती है, इसलिए चारा खाना कम कर देती है।

उपचार व रोकथामः उपचार के तौर पर सहयोगी उपचार, जिससे की प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत हो सके, जैसे की, कृमिनाशक का उपयोग करना, चारे में नियमित खनिज मिश्रण एवं विटामिन का उपयोग करना, इत्यादि सम्मिलित है। प्रभावित भाग को पोटैशियम परमेंगनेट (0.01%) के घोल से

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

साफ करना चाहिए। घावों पर ग्लिसरीन तथा टिंचर-आयोडीन, दिन में तीन से चार बार लगाना चाहिए। बचाव के लिए संक्रमित बकरी को अलग रखे। इस विषाणु की संक्रामकता अधिक होती है, इसीलिए इसके रोकथाम के लिए विशेष प्रबंधन करें।

ग. बाह्य व अंतः-परजीवी रोग

चपटाकृमि-संक्रमण

चपटाकृमि-संक्रमण उन जगहों पर ज्यादा देखा गया हैं, जहां घोंघों की आबादी ज्यादा होती है। घोंघों के लिए नमी वाली जगह जैसे कि, तालाब के किनारे, अथवा धीमी-गति से बहने वाले नहर का किनारा, इत्यादि उपयुक्त है। जब भी बकरियों को ऐसी जगह पर चरने के लिए छोड़ते हैं तो वह, घास के साथ मिरासिडियम (चपटाकृमि का विकासात्मक-चरण) को भी खा जाती हैं। जिस कारण बकरियां चपटाकृमि से संक्रमित हो जाती हैं।

लक्षणः दुर्बलता, रक्ताल्पता और निचले जबड़े के निचे सूजन हो जाता है। अगर यकृत-चपटाकृमि का संक्रमण हुआ है तो, रक्ताल्पता, पीलिया, रक्त में प्रोटीन की मात्रा में कमी, इत्यादि प्रमुख हैं। अगर यकृत में फेसिओला की संख्या ज्यादा है तो, यकृत का ज्यादा नुकसान होने के कारण बकरी की तुरंत मृत्यु (बिना किसी लक्षण के) हो सकती है। कभी-कभी यकृत मे इन्हीं नुकसानों से रक्त का बहाव पेट में होने लगता है और बकरी की मृत्यु हो जाती है। यकृत का नुकसान व ऑक्सीजन की कमी, जीवाणु-बीजाणु (क्लोस्ट्रीडियम) के पनपने की उपयुक्त स्थिति बनाती है। ऐसे में ब्लैक-रोग होने की संभावना अधिक होती है। अगर चपटाकृमि-संक्रमण एम्फीस्टोम का है तो, लक्षण में दस्त, दस्त में रक्त, दस्त से दुर्गंध आती है। शरीरिक वृद्धि में कमी, चारा कम खाना, पाचन में दिक्कत, रुखे बाल, इत्यादि प्रमुख लक्षण है।

उपचार व रोकथामः फेसिओला-संक्रमण के उपचार के लिए रिफोक्सानाइड (7.5 मिली./कि.ग्राम) अथवा ट्रायक्लाबेनडाजोल (12 मिली./कि.ग्राम) देना चाहिए। अगर एम्फीस्टोम का संक्रमण हो तो, ऑक्सीक्लोजानाइड (18.7 मिली./कि.ग्राम) अथवा रेसोरेन्टल (65 मिली./कि.ग्राम) देना चाहिए। इसके अलावा लक्षण के अनुरूप सहयोगी उपचार देना भी जरूरी है। बचाव के लिए बकरियों को उन जगहों पर ना छोड़े जहां पर घोंघों के पनपने के लिए अनुकूल वातावरण हो। चारागाह क्षेत्रों में घोंघों को नियंत्रित करें, सुबह और देर शाम के दौरान चराने से बचें और नियमित रूप से कृमिनाशक दे। ऐसी जगह पर कॉपर-सल्फेट का छिड़काव करें।

फीताकृमि

फीताकृमि-संक्रमण युवा बकरियों में ज्यादा होता है। व्यस्क बकरियों में फीताकृमि छोटी-आँत में होते है, परंतु इनमें लक्षण नहीं दिखते हैं। साधारणतः इनकी संख्या बिना लक्षण वाले बकरियों में कम होती है, अगर इनकी संख्या (संक्रमण) बढ़ती है (जो की युवा बकरियां में देखा गया है) तब इनमें लक्षण दिखते हैं। फीताकृमि के संख्या बढ़ने के कारण ये अधिक मात्रा में पोषक तत्वों का अवशोषण करते है, इसलिए बकरियां में कुपोषण के लक्षण दिखते हैं।

लक्षणः युवा जानवरों में वृद्धि दर में कमी, हल्का बुखार, रुखे बाल, बार-बार अपच होने के लक्षण दिखना, पेट में दर्द, कभी-कभी दस्त और मृत्यु दर में बढोतरी, इत्यादि प्रमुख लक्षण हैं।

उपचार व रोकथामः उपचार के लिए प्राजीक्विंटल (5 मिली./कि.ग्राम) देना आवश्यक है। सुबह के समय बकरियों को चरने न छोडें। जब धूप खिली हो तो ही बकरी को चरने के लिए छोड़े। हर छह महीने में पशुओं को कृमिनाशक दें।

गोलकृमि

गोलकृमि-संक्रमण सर्दियों में अक्सर अधिक होता है। ठंड के चलते बकरियों के लिए चरने का समय और जगह कम होने से बकरियाँ सीमित चारागाह पर ही चर पाती है। गोलकृमि के अंडे ऐसे जगहों पर एक सीमित संख्या से अधिक हो जाते हैं, इसलिए संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। युवा बकरियां में इसका संक्रमण ज्यादा होता है तथा इसके लक्षण भी अधिक दिखते हैं।

लक्षणः सभी गोलकृमि-संक्रमण में दस्त होता है। शरीरिक वृद्धि दर में कमी, बालों का रूखापन, पेट फूलना इत्यादि हो सकते है। इसके अलावा अन्य लक्षण भी हो सकते हैं जो की गोलकृमि-संक्रमण विशेष होते है। जैसे कि, गोलकृमि जो फेफड़ों में संक्रमण करते है उनमें, साँस लेने में दिक्कत, खांसी होती है। अगर हिमोंकस गोलकृमि का संक्रमण है तो, रक्ताल्पता, रक्त में प्रोटीन की कमी, निचले जबड़े की सूजन, शरीर के निचले भाग में सूजन दिखाई देता है। अगर गोलकृमि ओसोफेगोस्टोमम अथवा ओस्टरटेजिया है तो, दस्त ज्यादा काला और हरा रंग का होता है, दस्त में रक्त भी आता है। अगर दस्त का उपचार न किया गया तो मृत्यु हो सकती है।

उपचार व रोकथामः बकरियों को अल्बेंडाजोल, फेनबेंडाजोल या आइवरमेक्टिन से कृमिमुक्त करें। मल-परीक्षण के बाद कृमिनाशक का चयन ज्यादा लाभकारी होता है। बचाव के लिए हर तीन-चार महीनों में कृमिनाशक दें। कृमिनाशक-प्रतिरोध न हो इसलिए कृमिनाशक नियमित अंतराल पर बदलते रहे। जब गोलकृमि की संख्या चारागाह में ज्यादा होने की संभावना हो तो, बकरियों को दूसरे चारागाह मे छोडें।

कोक्सीडियोसिस

कोक्सीडियोसिस का संक्रमण युवा बकरियों में ज्यादा होता है। सर्दियों में, ठंड और शीत लहर के कारण संक्रमण का खतरा अधिक होता है। बाड़े में भीड़-भाड़, नमी, इत्यादि कोक्सीडियोसिस के संक्रमण को बढ़ा देते हैं।

लक्षणः दस्त, पेचिस, वजन में कमी, वृद्धि दर में कमी, बकरी का पिछले भाग हमेशा मल-मूत्र से सना होना, इत्यादि लक्षण प्रमुख हैं। दस्त पतला व बदबूदार होना, पेट में दर्द के लक्षण, हल्का बुखार भी हो सकता है।

उपचार व रोकथामः उपचार के लिए एम्परोलियम, सल्फामेथाजिन, सल्फाडिमीडीइन, नाइट्रोफुराजोन, टोलिट्रोरोजुरिल, इत्यादि तीन से पाँच दिन दें। अन्य लक्षणों के अनुरूप सहयोगी उपचार भी देना चाहिए। कोक्सीडियोसिस के बचाव लिए बाड़ें को साफ रखें तथा बाड़ें में बकरियों की संख्या सीमित रखें।

जूँ-संक्रमण

जूँ-संक्रमण सर्दियों में ज्यादा होता है। ठंड में बाल घने होने के कारण जूँ-संक्रमण की संभावना अधिक होती हैं। जूँ-संक्रमण के कारण बकरियां परेशान रहती है। चारा चरने में कम समय दे पाती है, अतः बकरियों की वृद्धि बाधित होती हैं।

लक्षणः बालों मे जूँ रहने से बकरियां हमेशा अपने शरीर को किसी दीवार अथवा खम्भें से रगड़ती है। जिसके कारण बाल झड़ना, खुजली और त्वचा पर घाव हो सकते है। शारीरिक वृद्धि दर में कमी, कमजोरी और रक्ताल्पता हो जाता है। बाल हमेशा रुखे दिखाते है ।

उपचार व रोकथामः जूँ एक वाह्य-परजीवी है इसके इलाज के लिए कीटनाशक जैसे कि मेलाथाओन अथवा साइपरमेथरिन की उचित सांद्रता के घोल को शरीर पर छिड़कना चाहिए। एक से दो छिड़काव, उपचार के लिए उपयुक्त है जो की 15 दिन में एक बार करना चाहिए। जूँ-संक्रमण बकरियों को आपस में एक साथ रखने से फैलता है।

प्रबंधन से बचाव व रोकथाम

अगर किसी बकरी में बीमारी के लक्षण दिखे तो उसे तुरंत स्वस्थ बकरियों से अलग करे। संक्रमित बकरी को पौष्टिक चारा दें। पशु-चिकित्सक की सलाह पर ही दवाओं का प्रयोग करें। बीमारी फैलने से पहले ही उसका इलाज शुरू करना जरूरी है, क्योंकि देर होने पर यह पूरी झुंड को प्रभावित कर सकती है। अगर नियमित रूप से सफाई, टीकाकरण और संतुलित आहार का ध्यान रखा जाए तो बकरियों को बीमारियों से बचाया जा सकता है। बकरियां नम और ठंडी जलवायु परिस्थितियों को सहन नहीं कर सकती है, इसलिए इनकी अधिक देखभाल करने की आवश्यकता होती है। बाड़ें, फर्श, चारा, इत्यादि के उचित प्रबंधन पर जोर देना चाहिए ताकि बकरियों की शारीरिक स्थिति अच्छी हो।

आवास

सर्दियों के महीनों के दौरान बकरियों के बाड़ें में ठंडी हवा को रोकना और जानवरों को सूखा रखना सबसे महत्वपूर्ण है। प्रत्येक बकरी के लिए कम से कम 3-6 मीटर जगह और दिन के समय कम से कम 4-5 घंटे धूप उपलब्ध हो ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। सर्दी के समय बकरियों के बाड़ें में सूखा भूसा बिछाएं ताकि नमी न रहे। इसके अलावा बकरियों के बाड़ को चारो तरफ से ढके ताकि ठंडी हवा अंदर न जा सके। सुबह 10 बजे के बाद और शाम को चार-पांच बजे तक ही बकरियों को चरने के लिए बाहर छोड़े।

सर्दियों के मौसम में बकरियों, विशेषकर मेमनों को हाइपोथर्मिया, निमोनिया या अन्य श्वसन संबंधी बीमारियों से बचाने के लिए, जूट की बनी बोरियों से ढके। फर्श पर पुआल या मोटे कपड़ों का भी उपयोग किया जा सकता है। एक सूखा, साफ और अच्छी तरह हवादार आवास प्रदान करें जो हवा और ठंड से सुरक्षा दें। बकरियों को ठंडी जमीन पर बैठने न दें और उन्हें गर्म कपड़े या बोरी से ढककर रखें।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पोषण

सर्दियों के दौरान बकरियों को अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, इसलिए उनका चारा बढ़ाएँ। उनके खाने में हरा चारा, खली, और थोड़ी मात्रा में सरसों का तेल शामिल करें, जो शरीर को गर्म रखता है। उन्हें सूखे चारे की भी आवश्यकता होती है, जिसकी आपूर्ति घास, अल्फाल्फा या मिश्रित घास से की जा सकती है। नमक और खनिज तत्व भी दे‍ने चाहिए। मेमनों को दानेदार चारा नहीं देना चाहिए क्योंकि वे अनाज पचाने में सक्षम नहीं होते है जबकि वयस्क बकरियों को यह खिलाया जा सकता है। जानवरों को शरीर की गर्मी बनाए रखने में मदद करने के लिए ऊर्जा से भरपूर संतुलित आहार प्रदान करें और यह सुनिश्चित करें कि ठंड के मौसम में निर्जलीकरण को रोकने के लिए स्वच्छ, गुनगुना पानी उपलब्ध हो।

स्वच्छता

बकरियों में बिमारियों को फैलने से रोकने के लिए बाड़ें को साफ और सूखा रखें और जानवरों के अपशिष्ट का उचित निपटारा करें। बाड़ें के कीटाणुशोधन के लिए दस प्रतिशत अमोनिया का उपयोग करें।

कृमि-मुक्ति और टीकाकरण

अंतःपरजीवी की समस्या सर्दियों के कारण होने वाले तनाव के कारण बढ़ जाती है। एक नियमित कृमि-मुक्ति कार्यक्रम लागू करें। बिमारियों से बचने का सबसे अच्छा तरीका है- समय पर टीकाकरण सर्दी शुरू होने से पहले बकरी प्लेग और एंटरोटॉक्सिमिया जैसे आवश्यक टीके लगवाएँ। बकरियों को चेचक के टीके भी लगवाते रहें।

खुरों की देखभाल

खुर की गलन और खुरों से संबंधित अन्य समस्याओं को रोकने के लिए नियमित रूप से खुरों को काटें। हर 3 महीने में खुरों को ट्रिम करना आवश्यक है।

संगरोध

नई बीमारियों के संक्रमण को रोकने के लिए नए जानवरों को झुंड में मिलाने से पहले उन्हें एक निश्चित समय के लिए अलग रखें। बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए बीमार पशुओं को तुरंत अलग करें।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

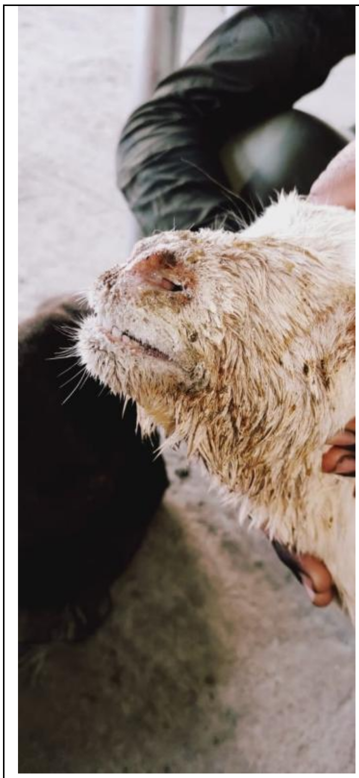	
नाक से स्राव (बकरी प्लेग)	आंख से स्राव (बकरी प्लेग)
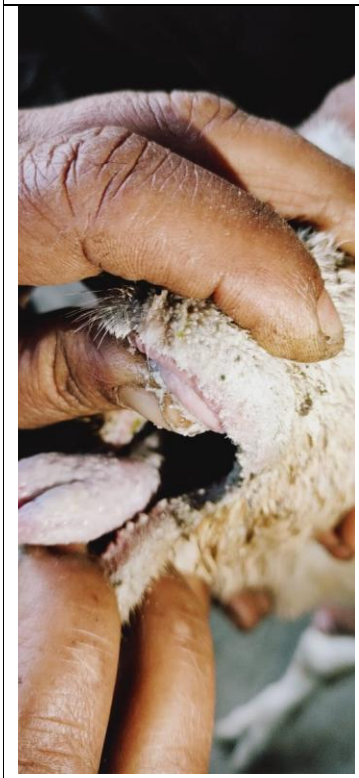	
मुंह में छाले (बकरी प्लेग)	नाक से स्राव (निमोनिया)

दस्त (बकरी प्लेग)	बकरी मे रक्ताल्पता

निष्कर्ष

ठंड में बकरी-रोग जानलेवा हो सकते है। बकरियों में मृत्यु दर इन रोगों के कारण अधिक होती है। इन रोगों से बचाव संभव है, जिन बीमारियों के लिए टीका उपलब्ध है, उन बीमारियों (बकरी-प्लेग, बकरी-चेचक, एंटरोटॉक्सिमिया, खुरपका-मुँहपका रोग, इत्यादि) के लिए उचित समय पर टिका लगवाना चाहिए। जिन बीमारियों के लिए टीका उपलब्ध नहीं है उनसे बचाव के लिए आवास एवं खान-पान में उचित प्रबंधन करके बकरियों से बचाया जा सकता है। ठंड में शरीर गर्म रखने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है ऐसे में बकरियों के चारे में बसायुक्त चारा का मात्रा अधिक होना आवश्यक है। खली, थोड़ी मात्रा में सरसों का तेल, नमक और खनिज-तत्व का नियमित मात्रा बकरी के चारे में सामिल करना आवश्यक है। बकरी को चरने के लिए गर्म समय में ही छोड़े, सुबह और शाम के समय बकरियों को बाड़ें के अंदर ही रखें।